आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 23 January, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा - आज बाबा को सबकुछ देकर हल्के होकर फरिश्ता बन विश्व को सकाश देने की सेवा करे।

आज तेईस जनवरी है। तपस्या सुन्दर रूप से चल रही है। बाबा भी हमारी बहुत पालना कर रहे है। बहुत सुख दे रहे है। स्मृति दिवस के दिन पर भी बाबा हमें याद दिलाया कि ....

" तुम्हारी चमक से संसार चमक रहा है .. रोशनी फैल रही है संसार में .. अब लोगों को पता चलेगा यह रोशनी कहाँ से आ रही है "

तो हम सभी अपने स्थिति को महान बनाये। योगयुक्त हो जाये ताकि हम लाइट हाउस बन संसार में प्रकाश फैलाते रहे। इससे ही विश्व का परिवर्तन होगा।

इसके लिए बहुत आवश्यक है स्वयं को सम्पूर्ण रूप से हल्का करने की। फरिश्ता बनने की और हल्का रहने के लिए सहज युक्ति बाबा ने बताई है ....

" हमारा हाथ बाबा के हाथ में है .. वो हमारा जिम्मेदार है .. वो हमारे सभी बोझ हरने आये है .. वो तो हमें महान बनाने आये है .. स्वराज्य देने आया है .. हमारी खोई हुई शक्तियाँ पुनः देने आया है "

हम अपनी जीवन उसके हवाले कर दे। बहुत बड़ी चीज़ है स्वयं को उसके आगे समर्पित कर दे ....

" बाबा .. हम तुम्हारे .. सबकुछ तुम्हारा .. मन तुम्हारा .. बुद्धि तुम्हारी "

बहुत सुख मिलेगा। जैसे कोई कमजोर व्यक्ति किसी पावरफूल व्यक्ति के शरण में आकर निश्चिंत हो जाता है। हम बाबा की शरण में चले। निश्चिंत हो जाये .....

" बच्चे भी तुम्हारे .. उनकी जिम्मेदारी भी तुम्हारी "

यह समर्पण भाव हमें बहुत निश्चिंत करेगा और महान बनायेगा। तब बाबा भी कहेंगे .....

" बच्चे .. मैं भी तुम्हारा .. और .. मेरा सबकुछ भी तुम्हारा "

अगर मनुष्य प्रारम्भ से ही अपना सबकुछ समर्पित कर दे, यह बात केवल कहने तक न रहे। कि जरूरत पड़ी तो कह दिया ....

" बाबा हम तो तुम्हारे है "

सच्चा समर्पण भाव यदि हो जाये, तो आपका परिवार भी सुखी, आपके बच्चे भी सुखी और चरित्रवान और जीवन समस्या और विघ्न से मुक्त हो जायेगा।

इसमें बहुत बड़ी शक्ति है। इसमें बहुत बड़ा रहस्य है। यह समर्पण भाव सचमुच बहुत ही गहरी बात है।

तो आज से हम करते रहे ....

" बाबा .. यह मन तुम्हारा है .. अब तुम्हारे जो संकल्प वही मेरे संकल्प .. तुम्हारी जो पसंद .. वही मेरी पसंद .. तुम जो चाहते हो .. हम ऐसे संकल्प करे.. वही हम करेंगे .. तुम्हारी इच्छा के विरूद्ध हम कुछ भी नहीं करेंगे .. बुद्धि भी तुमको अर्पित "

बुद्धि अहम् भाव से मुक्त, पूरी तरह डिवाइन, रिफाइन। अब हम अपने बुद्धि को ऐसा बना लेते है जिसमें बाबा बैठ सके। क्योंकि हमारी बुद्धि क्लीन नहीं है।

अगर हमारी बुद्धि डिवाइन नहीं है, तो उसमें भगवान कैसे बैठेंगे? हम चाहते है कि बाबा की याद रहे, और बुद्धि को हमने यदि व्यर्थ से भरा होगा, गंदगी से

भरा होगा, तो बाबा हमारी बुद्धि में बैठेंगे बी नहीं। हम योगयुक्त हो ही नहीं सकेंगे।

तो इस बुद्धि को पूरी तरह से समर्पित करके हम इसको रिफाइन कर दे, प्युरिफाइ कर दे। ताकि निरन्तर इसमें प्रभु वास हो सके।

तो आज सारा दिन हम बहुत सुन्दर तपस्या करेंगे। कल्पवृक्ष को सकाश देते रहेंगे। याद करे ...

" मैं पूर्वज हूँ .. मुझे सबकी पालना करनी है "

हम बड़ा है तो हमारे विचार भी बहुत बड़े महान होने चाहिए। तो विज़न बनायेंगे कि ....

" हमारे सिर पर ही कल्पवृक्ष खड़ा है .. और हमारी जो स्थिति है .. हमारी जो प्युरीटी है .. हमारी जो शक्तियाँ है .. उनके वायब्रेशन्स पूरे कल्पवृक्ष को जा रहे है .. बाबा हमारे साथी .. और हम कल्पवृक्ष को सकाश दे रहे है "

ऐसे कल्पवृक्ष के नीचे दिन में हर घन्टे में दो बार अवश्य रहकर विश्व को सकाश देंगे।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org